समकालीन मैथिली कथामे राजनीतिक चेतनाक अभिव्यक्ति

– प्रो. (डॉ.) वीरेन्द्र झा

कोनो भाषाक समकालीन कथामे ओहि कालक राजनीतिक चेतनाक अभिव्यक्ति होइते टा छैक। मैथिलीक आरम्भिक कथा बाल विवाह, बेमेल-विवाह, बहु-विवाह, विधवाक व्यथा इत्यादि वैवाहिक-सामाजिक विषय पर आधारित होइत छल। एहि कोटिक कथाकार छलाह-जनार्दन झा 'जनसीदन', वैद्यनाथ मिश्र 'विद्यासिन्धु', काली कुमार दास, रास बिहारी दास, कुमार गंगानन्द सिंह इत्यादि। हिनका लोकनिक उद्देश्य छलन्हि स्त्रीक दशामे सुधार आ उद्धार।

एकर पश्चात् मुख्यत: सामाजिक कुरीति पर आधारित कथा लिखनिहार लोकनि मे पांक्तेय-श्री वल्लभ झा, श्यामानन्द झा, श्याम सुन्दर झा 'मधुप', हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज', शारदानन्द ठाकुर विनय, जयनारायण मल्लिक, लक्ष्मीपति सिंह इत्यादि भेलाह। एहिमे केवल श्याम सुन्दर झा 'मधुप' क कथा–'प्रतिज्ञा पत्र' मे राजनीतिक चेतनाक अभिव्यक्ति भेटैत अछि। ई कथा स्वतंत्रता संग्राममे मिथिलाक सहभागितापर आधारित छल। ई 1937 ई०क कथा छल। एकर बादे दोसर वर्ष (1938 ई० मे) काञ्चीनाथ झा 'किरण' क कथा-'चारि सेर खूनक खोज केनिहार के ?' आएल, जाहिमे सर्वप्रथम अंगरेजी शासन व्यवस्थाक आलोचना करबाक साहस कएल गेल। एहने भाव भूमि पर 'किरण'जी दोसर कथा 'धर्मरत्नाकर' (1945 ई०) लिखलन्हि।

स्वतन्त्रता प्राप्तिक पश्चात् लोकमे नव चेतनाक संचार भेलैक। प्रशासनक प्रति लोक साकांक्ष भेल। राजनीति करएवलाक नव-नव फसिल तैयार होबए लगलैक। लोक ओकरा महत्त्व देबए लगलैक। आब छिट-फुट नहि, अपितु व्यापक रूपसँ राजनीतिक चेतनासँ असम्पृक्त रहब सम्भव नहि रहलैक। स्वतन्त्रता प्राप्तिक मोहभंग आओर आगिमे घीक काज करए

लगलैक। एही सभ पृष्ठभूमिमे राजनीतिक अवस्थापर घोर चिन्तासँ मैथिली कथामे अबैत छथि-सोमदेव, धूमकेतु, राजमोहन झा, रमानन्द रेणु, प्रभास कुमार चौधरी, बलराम, गंगेश गुंजन, जीवकान्त, उषाकिरण खान, विनोद बिहारी लाल, तारानन्द वियोगी, विभूति आनन्द, शिव शंकर श्री निवास, प्रो. वीरेन्द्र झा इत्यादि कथाकार लोकनि, जनिक कोनो-कोनो कथामे राजनीतिक चेतनाक अभिव्यक्ति स्पष्ट रूपसँ देखएमे अबैत अछि। एहि कोटिक कथाकारमे किछुक कथा द्रष्टव्य थिक।

'युद्ध...युद्ध...युद्ध...'[1] कथा श्रीराजमोहन झाक छन्हि। ई भारत-पाक मध्य तृतीय युद्ध पर आधारित अछि। कथा संवेदित करैत अछि। एहिमे राजनीतिक घटनाक्रमक संग दाम्पत्यक द्वन्द्वकेँ पुरुषक मानसिकतासँ नीक जकाँ देखल गेल अछि। ई सत्य थीक जे संवेदनशील व्यक्ति एकहि संग कतेको स्तरपर 'युद्ध' करैत अछि; ओकर द्वन्द्व-प्रतिद्वन्द्व साक्षी होइत अछि-"...ओकरा ई सोचि कने कोनादन लगलैक जे ओ आइ-काल्हि युद्धक दुतरफा स्थितिमे जीबि रहल अछि। अथवा, एक संग दू मोर्चा पर लड़ि रहल अछि-एक ओहि देशमे जत' ओ रहैत अछि, ओ दोसर, ओहि देशक भीतर ओहि घर नामक स्थानमे जत' ओ, फेर रहैत अछि। अपन एहि दुतरफा दायित्व अनुभूति एक दिस जत' ओकरामे पर्याप्त आत्मदया अथवा अपना प्रति सहानुभूतिक भाव भरि गेलैक ततहि दोसर दिस ओकरामे अपराध -भावना सेहो जनमा देलकैक।.... मुदा ओकरा लगलैक जे ओ एहिमे चाहियो क' किछु नहि क' सकैत अछि। ओ युद्धक लेल विवश क' देल गेल अछि। एहिमे पत्नीक भूमिका सदासँ पाकिस्तानबला रहलैक अछि।"[2]

कथामे वातावरणक निर्माण नीक जकाँ भेल अछि; पाठक ओहि घटनाकालमे भ्रमण करए लगैत अछि। कथा विश्वसनीय लगैछ। देशवासी एकजुट भए एक सजग नागरिकक दायित्वबोधसँ उत्प्रेरित छल; बच्चा-बच्चा यथासामर्थ्य तत्कालीन दुश्मन-देशसँ भिड़बाक लेल तैयार छल। तकर सजीव चित्रण कथाकारक लेखनीसँ लगैछ।

दोसर दिस कथामे पति-पत्नीक मानसिक अन्तरयुद्ध सेहो चलैत रहैछ। कथाकारक नायक पुरूष मानसिकतासँ ग्रसित लगैछ, किन्तु फेर मनहि मन प्रतिकार करैछ जे अपन व्यवहारसँ तत्कालीन दुश्मन-देश पाकिस्तानक मानसिकताक नहि कहाओत ?

साहित्यकारकेँ युगद्रष्टा ओ युगस्रष्टा सेहो कहल गेल अछि। कथाकार दरभंगामे रेडियो स्टेशन खुलए टा नहि, अपितु ओहिसँ मैथिलीमे समाचार प्रसारणक कल्पना करैत छथि आ आशंको प्रकट करैत छथि जे–" ..उद्घोषक कतहु 'मैथिली'क स्थानपर 'मयथिली' ने बाजि दैक !...."[3]

कथाकारक कामना फलित तँ भेलन्हि, मुदा आशंका सेहो सत्यसिद्ध भए रहल छन्हि।

गंगेश गुंजनक कथा 'रखवाली'[4] गामक घृणित जातीय राजनीतिपर आधारित छन्हि। एहिमे जातिक आधार पर अपन गोटी लाल करएबला चरित्रकेँ कथाकार देखार कएलन्हि अछि; पंचायतक मुखिया अपन स्वार्थसिद्धिक लेल समाजकेँ जातीय उन्मादमे झोंकि दैत अछि। इहो राजनीतिक एक छोट आ घृणित रूप थिक।

एहिमे एकटा पात्र अछि-शंभू। ई कथित उच्च वर्गसँ अबैत अछि, किन्तु ओकर अबरजात समाजक सभ जाति-धर्मक लोकक ओतए छैक। ई अपने जातिक एकटा मालिकसँ महीस पोसिआ लैत अछि आ मेहनतिक बलपर खूब दूध होअए लगैत छैक। समाजक दुष्ट दिआद-बादकेँ से देखल नहि जाइछ आ उकसा कए मालिकसँ छिनबा देल जाइछ।

शंभू गुजर-बसर करएक लेल समाजक तथाकथित एकटा निम्न जातिक मालिकक महीस पोसिआ लैत अछि, मुदा इहो जातीय दंभपर अमरलत्ती जकाँ छाएल लोककेँ पसिन्द नहि जे शंभू कथित निम्न जातिक महीस पोसत !

मुखियाकेँ गामक एकटा कथित उच्च वर्गक दु:खहरणक जमीनपर आँखि गड़ि गेलैक; ओ ओकरा अपन जमीनमे मिला लेबाक उपक्रममे लागि गेल, मुदा दु:खहरणक सेहो विवशता छलैक, किएक तँ ओकरा जीविकाक लेल आन कोनो साधन वा जमीन नहि छलैक, तेँ बेचएसँ अस्वीकार कए देलकैक।

एक दिन दु:खहरणकेँ खेत कोरैत देखि मुखिया हँसेड़ी समेत धमकि गेलैक आ जातिक नाम लए गारि पढ़बाक लांछन लगबैत दु:खहरणकेँ

पिटबाबए लगलैक। शंभूकेँ ई नहि देखल गेलैक; ओ छोड़ाबए चाहलकैक कि सभ ओकरोपर टूटि पड़लैक–ई कहैत जे–कहैत ने छलिऔक अपना जातिक जासूस बनि ई अपन सभक ओहि ठाम अबैत छलौक।

दु:खहरण तँ ठामहि दम तोड़ि देलकैक, मुदा शंभूक हुकहूकी बाँचल छलैक। शिवनन्दन काका शंभू केँ अस्पताल लए जएबाक ललकारैत कहलथिन्ह जे शंभूक संग एहि गामक उम्र जुड़ल छैक। शिवनन्दन सेहो जातिद्रोही घोषित भए गेलाह।

ग्रामीण समाजक तिकड़मकेँ कथाकार नीक जकाँ पकड़लन्हि अछि। ओना कथामे सोझे जातिक नाम लेब आजुक समयमे खटकए लगैत अछि, मुदा जाहि समयमे ई कथा लिखल गेल एहन स्थिति नहि भेल छलैक। तइयो कथाकार जातिक आगू 'तथाकथित' वा 'कथित' लिखितथि, से अपेक्षा छल।

विभूति आनन्दक कथा थिक–'गाँधी'[5]। एहिमे महानतम राष्ट्रीय चरित्र-गाँधीजीक गाँधीवादीसँ पगाएल एकटा पात्र अछि रामपुरक विधायक, लोकप्रिय नाम–'रामपुरक गाँधी'। विशुद्ध जनसेवक, ईमानदार आ जनताक नि:स्वार्थ सेवा कएनिहार, मुदा दू-दू बेर जितलोपर मंत्री पदसँ वंचित। तकर कारण ई अपने पार्टीक दागदार नेताकेँ देखार करैत छथि। तेसर बेर हिनक पुत्र-सदृश व्यक्ति मुख्यमंत्री बनलथिन्ह। तखन हिनका मंत्रिपद स्वीकार करबाक आग्रह कएल गेलन्हि।

एहिमे कथापात्रकेँ महान् वा सम्मानीय व्यक्ति तँ केओ बना दैत छन्हि, मुदा संग सटा कए राखब खीरक कंकड़ बुझल जाइन्हि।

जातीय आधारपर देल गेल मंत्रिपद ई मोन मारि कए स्वीकार कएने रहथि। लगुआ-भगुआ, पत्नीक आग्रह आदि छलन्हिए। आत्मधिक्कार बरोबरि सचेत करन्हि। ऑफिसमे पसरल भ्रष्टाचारक आगू विवश। गाम-समाज, कुटुम्ब-परिवार, दोस्त-महिम, सहयोगी-सहकर्मी इत्यादिक वैयक्तिक हितक कोनो काज नहि करथिन्ह, तेँ चारू दिस विरोधक स्वर उभरए लगलन्हि। मुख्य मंत्री पुत्र-तुल्य छलथिन्ह आ सम्मानो तहिना देथिन्ह, मुदा एहि गाँधीजीक कार्यशैलीसँ ओहो परेशान। एहिनामे तँ हुनको लेल चारू दिस समस्ये ठाढ़ भेल जा रहल छलन्हि, तेँ एक दिन कहलथिन्ह–"...पाँव लागी

साहू चचा!' ओ हड़बड़ा गेल रहथि। मुदा सी.एम. नहि हड़बड़ाएल रहथिन। बैसबाक संकेत कऽ अपनो बैसि गेल रहथि। थोड़ेक काल सभक समक्ष हुनक गाँधीवादी चरित्रक यशोगान कएने रहथिन। फेर एकाएक शुरू भऽ गेल रहथिन–'बुझिये कि आपका काम को कोई साला गाली नहीं दे सकता है। बाकी ऐसे में तो कमबा नहिये नू चऽल सकता है। असंतोष लहरा रहा है। बुझिये कि, ई साला असंतोष को मूड़ी अलगाने से पहिले रोलर से पीच दीजिए....नहीं तो ए.के. 56 से उड़ा दीजिए...अऊर तब, बुझिये कि दुनू घर अबाद रहिये....।'[6]

एहि तरहें असगरे गाँधीजी सेहो 'गाँधी' नहि रहि पाबितथि: एहन वातावरणमे अपने सोझाँ स्वयंक अरथी उठा चुकल रहितथि। जेना डेग-डेगपर आदर्शहीनताक तलवार लटकल रहैत छैक तेनामे शुद्ध आदर्शवादी भेनाइ सम्भव नहि। इएह आजुक राजनीतिक चरित्र अछि। रुचिकर शैलीमे लिखल ई कथा कहैत अछि जे मोटामोटी आदर्श सिद्धान्ते धरि राखू; व्यवहारमे गाँधीक फोटो वा टोपीमे (आदर्शकेँ) राखि दिऔक, जेना कार्यालय सबमे लागल रहैत छैक; तखने घर-परिवार आदि सभ ठाम सफल मानल जाएब।

एहि पंक्तिक लेखकक सेहो एकटा कथा अछि-'उपदेश'[7]। गाँधी आदिक आदर्श चरित्रकेँ पिता आत्मसात् कएने छथिन्ह, मुदा कओलेजमे पढ़ैत पुत्रकेँ 'सादा जीवन : उच्च विचार' क उपदेश काटए दौड़ैत छन्हि। आइ-काल्हिक युवक कोनो सिद्धान्तक अन्धानुगामी नहि होबए चाहैछ : ओ यथार्थक धरातलपर जीबए मे विश्वास करैछ। पुत्र कहैत छन्हि जे अहाँ सभ जे धरिआ पहिरि-पहिरि आन्दोलन कएलहुँ तकर कोन सुफल भेटल ? पेंसनो नहि भेटल! छोटका कका अन्य कारणसँ जहल गेल रहथि आ स्वतन्त्रता-सेनानीक तरह-तरह सुविधाक भोग कए रहल छथि; केवल अपन तिकड़म आ साहेबीक बल पर, ओ दोसर दिस अहाँ खराम पहिरि खटर-खटर करैत रहू। की नैतिकताक आधारपर नौकरी-चाकरी भेटैत छैक ? पितेक समक्ष पड़ल ओही दिनक समाचारपत्रक सुभाषितक चर्च विजयीमुद्रामे करैत कहलकन्हि जे पढ़ने होमए ने जे सुन्दर वेश-भूषाबला विष्णुकेँ लक्ष्मी भेटलन्हि आ बाघम्बरधारी शिवकेँ विष।

पिता कहैत छथिन्ह जे हमरालोकनि पेंशनक लोभसँ स्वतन्त्रता आन्दोलनमे भाग नहि लेलहुँ आ ताहि लेल कोनो दुःखो नहि अछि, मुदा मोन राख जे स्वतन्त्रता-संग्राममे धरियेबला बेसी काज अएलैक; सूट-बूटबला नहि।

रमानन्द रेणुक कथा अछि-'अग्निव्यूह'[8]। ई कथा खेतक मालिक आ बटिदारक मानसिकतापर आधारित अछि। एहिमे माइन्जन अपन तिकड़मकेँ सफल बनएबाक जे-से अभियान चलबए लगैत अछि। जेना कहलो गेल छैक जे नेता आ ... कतहु आगि पाकए? एहू कथामे माइन्जन आ ओकर सरदारी बचले रहि जाइछ। मारल जाइत अछि बेचारा बोनिहार। कथाक अन्त एकटा सामान्य बोनिहारक तड़पैत परिवारसँ होइत अछि, जखन कि ओ अपन सम्पूर्ण हित-अहित माइन्जनकेँ सौंपि निश्चिन्त भए गेल छल।

कथाकार राधाकृष्णक 'लालकार्ड'[9] एकटा एहन कथा थिक, जाहिमे प्रजातान्त्रिक व्यवस्थामे छद्म सामाजिक एकतापर चोट अछि, जतए जाति-सम्प्रदायमे सुविधाकेँ बाँटि देल गेल अछि। गरीबक नामपर राजनीति तँ सभ नेता करैछ, मुदा जे असली गरीब तकरा देखएबला केओ नहि। सभ अपन-अपन स्वार्थक राजनीतिमे सन्नद्ध रहैत अछि। कथाक पात्र पंडित जनार्दनक मृत्यु भूखसँ भेलन्हि। एकरा मुद्दा बना विपक्षी उग्र भए तँ गेल, मुदा हिनका परिवारकेँ कोनो तरहक सरकारी सुविधा नहि देल जा सकैत अछि, किएक तँ ई लालकार्डधारी नहि छथि। सरकारी पक्षक हिसाबें हिनक मृत्यु भूखसँ नहि भेलन्हि; हिनका लग एखन लोटा, अरघा, पंचपात, भगवानक पितरिआ सिंहासन आ अक्षत लेल जोगाएल अरबा चाउर छलन्हिए; ई सब तँ भरलाक बादो देखल गेलन्हि। भूखसँ बचवाक लेल ई सब तँ बेचिए सकैत छलाह। भूखसँ मृत्यु कोना मानल जएतन्हि।

हिनक बेटा जगदीश गाम आएल रहैक। एकरा कलकत्ताक मजदूर यूनियनक हवा लागल रहैक, तेँ ई एहि बेर गाममे आर्थिक ओ सामाजिक क्रान्ति चाहैत छल, मुदा गाममे रहएबला भाइ जगदीशकेँ एहि मानसिकतासँ फराक राखए चाहैत छलैक आ प्रत्येक समस्याक समाधान शान्तिपूर्वक चाहैछ। भाइकेँ भय भए गेलैक जे जगदीश गाममे हिंसक क्रान्ति करए चाहैत अछि। स्पष्ट कए मना करैत कहलकैक जे हम तोहर एहि काजमे किन्नहु मदति नहिं करबौक। प्रतिक्रियामे जगदीश कहैत छैक-"भाइजी, हम

भेद-भावक खाधि 'भर' चाहैत छी, बाइस वर्षक स्वतन्त्रता आब बासि लगैछ। सामाजिक कल्पना दिवा-स्वप्न सन। कल्पना मात्र। अहाँ अन्हर-बिहाड़ि के रोकि सकबैक ? छोट-छीन घर निरापद होइछ। बड़का घर केँ बिहाड़ि लगवे करतैक।"[10] ई विषमता समाप्त कतए धरि होइत, बल्कि वोटक आरिमे भीषण रूप धयने जा रहल अछि।

साकेतानन्दक 'उपक्रम'[11] कथामे मिल. मालिक आ मजदूरवर्गमे राजनीति ओ संघर्षक कथा अछि। एहि कथामे उजागर कएल गेल अछि जे एके तरहक कानूनक पाबन्दी तोड़नाइ मालिकक लेल शानक विषय होइछ जखन कि मजदूरक लेल अक्षम्य अपराध। कामाख्या नामक नवयुवककेँ इएह कचोटैत छै। उपक्रम इहो जी जानसँ करैछ, किन्तु कनेको बेरूखी भए गेने मालिक मोनमे राखि लैछ आ हरदम तिरस्कार करए लगैछ–"....गाम मे किछु नहि मात्र डीह भरि छलैक, तकरा छोड़ि शहर आयल जे एहिठाम त' ओ ककरो बहिया नहि अछि।...मुदा एहि स' त' गामे नीक रहै, ओहिठाम मालिकक एंड़, घरमेचक संग-संग किछु भेटितो रहैक। खाली मारे टा नहि सम्हारो छलैक। एहिठाम त' मेहनतक कमाइ खाइ लय पामौजी कर' पड़ै छै लोकक। तकर विरोध केँ दुस्साहस आ विद्रोह बुझल जाइत छैक। अहि ठाम वैह टा लोक अछि जे कार स' उतरैत अछि आ कोठी मे जाइत अछि, बाकी सब चुट्टी-पिपड़ी।"[12]

एक दिन एहिना कामाख्या मिलक बरामदाक सीढ़ीपर टिफिन खोलि खएनाइ शुरू कएलक तँ मालिक टिफिन फेंकि देलकैक जे कारखाना खाइक स्थान नहि छैक। कामाख्या हतप्रभ भए गेल, मुदा एकर मोन खौलैत रहलैक। किछु दिनक बाद मालिको ओही बरामदापर टिफिन खोललकैक; एके-दू कौर मुँह मे धएने होएत कि कामाख्या माथ पर कोन चिरनिया नाचय लगलैक जे अपन चाकरी आ माएक चिन्ता छोड़ि मालिकोक टिफिन जुमाकए ई कहैत फेंकि देलकैक जे ई खायक स्थान नहि छैक। एही बातपर बबाल मचि गेलैक; कनफुसकी-गुटबाजी होअए लगलैक। मामला थाना जएबाक सेहो आबि जइतैक, मुदा उपरक अफसर बात बढ़ए नहि देलकैक।

कथामे रोचकता छैक। अन्तमे लगैत छैक जे कामाख्याकेँ अपन हरकतिसँ जरूर सन्तुष्टि भेटल होएतैक। पाठकोक मन हल्लुक होइत छैक। सहजहि प्रेमचन्दक 'इस्तीफा' कथा स्मरण भए उठैछ।

शिव शंकर श्रीनिवासक कथा छन्हि-'चक्का'[13] । ई कथा सरकारी संस्थाक निजीकरणक मादे राजनीतिक चेतनाकेँ प्रक्षेपित करैत अछि । गामक सरकारी स्कूलकेँ प्राइवेट बना देबाक चालि चलल जा रहल छैक; ई बहाना बनबैत जे ठीकसँ पढ़ाइ-लिखाइ नहि होइत छैक, मुदा पहिलुका मास्टर साहेबकेँ लगैत छन्हि जे एना भेलासँ गरीबक नेना नहि पढ़ि पओतैक । इहो परिस्थिति एकटा चक्काक आभास करबैत अछि । जहिआ ई स्कूल खुजल रहैक तहिआ ड्योढ़ीमे धनिके लोकक बच्चा पढ़ैत रहैक । आइयो जौं प्राइवेट बना देल जएतैक तँ फेर ओएह हाल भए जएतैक, किएक तँ पाइक कारणें पाइएबलाक बच्चा पढ़तैक ।

एहि कथाक मादे जॉर्ज ग्रियर्सनक चर्चा होइत अछि; हिनक प्रयासेँ स्थापित स्कूलसँ सिद्ध होइछ जे ई शिक्षाक लेल कतेक सजग अधिकारी रहथि ।

उपसंहार

एहि तरहें देखैत छी जे समसामयिक कथामे राजनीतिक चेतनाक दिग्दर्शन विभिन्न कथामे अनेक कथाकार कएलन्हि अछि । कथा सभमे रोचकताक प्रति सेहो कथाकार साकांक्ष रहलाह अछि । वर्तमान कालमे कोनो सजग व्यक्ति राजनीतिक चेतनासँ असम्पृक्त रहिओ कए नहि रहि पाओत, तँ तेँ सभ तथाकथित जाति, धर्म, वर्ग इत्यादिमे राजनीतिक चेतना देखल जाइत अछि । जहिना 'युद्ध...युद्ध...युद्ध' कथामे कथाकार राजमोहन झा कहने छथि जे युद्ध थोपि देल जाइछ तहिना लोकतांत्रिक व्यवस्थामे राजनीतिक चेतना लोकक विवशता भए जाइछ । एकर सहजहि अभिव्यक्ति कथा वा साहित्यक आन विधामे भेटव सर्वथा स्वाभाविके ।